

ऋणमोचक मंगल स्तोत्र – संपूर्ण

श्री मंगलाय नमः ॥

श्लोक 1

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः ।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मविरोधकः ॥1॥

श्लोक 2

लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः ।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः ॥2॥

श्लोक 3

अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः ।
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः ॥3॥

श्लोक 4

एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत् ।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ॥4॥

श्लोक 5

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥5॥

श्लोक 6

स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत् पठनीयं सदा नृभिः ।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित् ॥6॥

श्लोक 7

अङ्गारक महाभाग भगवन्भक्तवत्सल ।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय ॥7॥

श्लोक 8

ऋणरोगादिदारिद्र्यं ये चान्ये ह्यपमृत्यवः ।
भयक्लेशमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥8॥

श्लोक 9

अतिवक्त्र दुराराध्य भोगमुक्त जितात्मनः ।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥9 ॥

श्लोक 10

विरिञ्चिशक्रविष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा ।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः ॥10 ॥

श्लोक 11

पुत्रान्देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः ।
ऋणदारिद्र्यदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः ॥11 ॥

श्लोक 12

एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम् ।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा ॥12 ॥

ऋणमोचक मंगल स्तोत्र का हिंदी अर्थ (Meaning in Hindi)

Rin Mochan Mangal Stotra In Hindi का अर्थ इस प्रकार है:

श्लोक 1 का अर्थ

"हे मंगल देव! आप 'मंगल' हैं अर्थात् शुभ करने वाले, 'भूमिपुत्र' हैं पृथ्वी से जन्मे, 'ऋणहर्ता' हैं ऋण नाशक, 'धनप्रद' हैं धन देने वाले, 'स्थिरासन' हैं अपने आसन पर दृढ़, 'महाकाय' हैं विशाल शरीर वाले, और 'सर्वकर्मविरोधक' हैं सभी कार्यों की बाधाओं को दूर करने वाले।"

श्लोक 2 का अर्थ

"हे मंगल देव! आप 'लोहित' हैं लाल वर्ण वाले, 'लोहिताक्ष' हैं लाल नेत्रों वाले, 'सामगानां कृपाकर' हैं सामग ब्राह्मणों पर कृपा करने वाले, 'धरात्मज' हैं धरती माँ के पुत्र, 'कुज', 'भौम', 'भूतिद' हैं ऐश्वर्य देने वाले, और 'भूमिनन्दन' हैं पृथ्वी को आनंद देने वाले।"

श्लोक 3 का अर्थ

"हे मंगल देव! आप 'अंगारक' हैं अग्नि वर्ण वाले, 'यम' स्वरूप हैं, 'सर्वरोगापहारक' हैं समस्त रोगों को हरने वाले, 'वृष्टिकर्ता' हैं वर्षा करने वाले, 'वृष्टिहर्ता' हैं अकाल लाने में समर्थ, और 'सर्वकामफलप्रद' हैं सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले।"

श्लोक 4 का अर्थ

"जो मनुष्य इन इक्कीस नामों को नित्य श्रद्धापूर्वक पढ़ता है, उसे कभी ऋण नहीं होता और वह शीघ्र ही धन प्राप्त करता है।"

श्लोक 5 का अर्थ

"पृथ्वी के गर्भ से उत्पन्न, बिजली की कांति के समान आभा वाले, शक्ति-हस्त कुमार मंगल देव को मैं नतमस्तक होकर प्रणाम करता हूँ।"

श्लोक 6 का अर्थ

"मनुष्यों को इस मंगल स्तोत्र का सदैव पाठ करना चाहिए। जो करता है, उसे मंगल ग्रह से उत्पन्न कोई भी पीड़ा नहीं होती।"

श्लोक 7 का अर्थ

"हे अंगारक! हे महाभाग! हे भक्तवत्सल भगवान! मैं आपको नमन करता हूँ। कृपया मेरे समस्त ऋणों को शीघ्र नष्ट कर दीजिए।"

श्लोक 8 का अर्थ

"मेरे ऋण, रोग, दरिद्रता, अकाल मृत्यु का भय, क्लेश और मानसिक कष्ट ये सभी सदा के लिए नष्ट हो जाएँ।"

श्लोक 9 का अर्थ

"हे मंगल देव! आपको प्रसन्न करना बड़ा कठिन है। जब आप प्रसन्न होते हैं तो साम्राज्य देते हैं, और जब क्रोधित होते हैं तो उसे पलभर में छीन लेते हैं।"

श्लोक 10 का अर्थ

"हे मंगल देव! ब्रह्मा, इन्द्र और विष्णु भी आपके क्रोध से अछूते नहीं रहे फिर मनुष्य की तो बात ही क्या। आप ग्रहराज हैं, महाबलशाली हैं।"

श्लोक 11 का अर्थ

"हे भगवान! मुझे संतान दीजिए, धन दीजिए। मैं आपकी शरण में हूँ। ऋण, दरिद्रता और शत्रुओं के भय से मुझे मुक्त कीजिए।"

श्लोक 12 का अर्थ

"जो मनुष्य इन 12 श्लोकों से मंगल देव की स्तुति करता है, वह महान वैभव प्राप्त करता है। वह धन में कुबेर के समान और चिरयुवा बना रहता है।"